प्रेस विज्ञप्ति

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
पंतनगर, जिला– ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)

डेरी पशु पालन पर एक–दिवसीय संगोष्ठी कार्यक्रम आयोजित

पन्तनगर। 11 अक्टूबर 2023। विश्वविद्यालय के जनरल विपिन रावत पर्वतीय शोध शिक्षाणालय द्वारा पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय सभागार में एक–दिवसीय डेरी पशुपालन संगोष्ठी कार्यक्रम अयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में जनपद नैनीताल, चम्पावत एवं ऊधम सिंह नगर के लगभग 45 प्रगतिशील डेरी पशुपालकों ने प्रतिभाग किया। कार्यक्रम के शुभारम्भ में जनरल विपिन रावत पर्वतीय शोध शिक्षाणालय के निदेशक डा. ऐ.एस. जीना ने सभी अथितियों का स्वागत करते हुए कार्यक्रम के उद्देश्य से अवगत कराया। अधिष्ठाता डा. एस.पी. सिंह ने पशुपालन व्यवासाय के महत्ता पर प्रकाश डालते हुए किसानों से आवहन किया कि डेरी व्यावसाय से अधिक आय अर्जित करने के लिये वैज्ञानिक तरीकों को अपनाना जरूरी है। उन्होंने यह भी कहा कि पशुचिकित्सा महाविद्यालय के वैज्ञानिक पशुपालकों के उन्नति के लिये प्रतिबद्ध हैं एवं इस तरह के कार्यक्रम पशुपालकों के लिये निरन्तर अवधि पर किये जायेंगे। डा. बी.सी. मण्डल ने दुधारू पशुओं के उत्पादन क्षमता बनाये रखने के लिये सन्तुलित आहार देना आवश्यक बताया। डा. शिव प्रसाद ने दुधारू में होने वाले प्रजनन सम्बन्धी बीमारी जैसे समय से गर्भधारण न करने, गरमी में नहीं आना व रिपिटब्रिडिंग आदि के निराकरण हेतु विस्तृत व्याख्यान दिया। डा. बी.एन. साही ने दुधारू पशुओं के विभिन्न नस्लों से परिचय देते हुए देशी प्रजाती के पशु साहीवाल, गीर एवं थारपार्कर को भी यहां के जलवायु के हिसाब से उपयुक्त बताया। डा. प्रणीता सिंह ने डेरी व्यवसाय से अधिक आय अर्जित करने के लिये पनीर, लस्सी, मठ्ठा, कुल्फी और आईसक्रीम आदि बनाने के विधि पर चर्चा की। कार्यक्रम के संयोजक डा. राजीव रंजन कुमार ने दुधारू पशुओं में होने वाले प्रमुख परजीवी रोगों जैसे बबेसियोसिस, थेलेरियोसिस, सर्रा, फैसियोलोसिस आदि रोगों के निदान एवं रोकथाम पर चर्चा करते हुए किसानों को रोगों से सम्बन्धित लक्षण प्रदर्शित होने पर गोबर एवं रक्त परिक्षण करने के उपरान्त ही कृमिनाशक औषधियों का उपयोग करना बताया। थेलेरियोसिस रोग से पशुओं को बचाने हेतु टीकाकरण अपनाने को कहा। डा. आर.के. शर्मा ने महाविद्यालय द्वारा किसानों के लिये संचालित पन्तजा बकरी परियोजना से अवगत कराते हुए पन्तजा बकरी पालन को लाभप्रद बताया। कार्यक्रम के अन्त में निदेशक शोध डा. ऐ.एस. नैन ने बताया कि आज भारत पूरे विश्व में दुग्ध उत्पादन में प्रथम स्थान पर है। लेकिन पशुओं की संख्या को देखते हुए प्रति पशु दुग्ध उत्पादन काफी कम है जो चिन्ताजनक विषय है। उन्होंने यह भी कहा कि अगर पशुपालक वैज्ञानिक पद्वति एवं वैज्ञानिकों से समय–समय पर परामर्श लेकर पशुओं से अधिक से अधिक दुग्ध उत्पादन किया जा सकता है। डा. नैन ने विश्वविद्यालय एवं राज्य सरकार द्वारा डेरी पशु पालकों की उन्नति के लिये चलाये जा रहे विभिन्न परियोजनाओं से भी अवगत कराया। माननीय प्रबन्ध परिषद् विशाल राणा ने बताया कि डेरी पशु पालक एवं पशु वैज्ञानिक के बीच सम्पर्क से ही पशु पालन व्यवसाय का लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है। डेरी पशु पालक एवं पूर्व विधायक श्री नवीन दुम्का ने कहा कि विश्वविद्यालय द्वारा पशु पालकों के उन्नति के लिये समय–समय इस तरह के कार्यक्रम आयोजित किया जाना लाभप्रद होगा एवं आस–पास के डेरी पशु पालकों एवं महाविद्यालय के वैज्ञानिकों के बीच सम्पर्क सूत्र स्थापित करने का सुझाव दिया।

इस कार्यक्रम के आयोजन के लिये डेरी पशु पालक उमेश चन्द्र भट्ट एवं तारा चन्द्र जोशी ने कुलपति डा. मनमोहन चौहान के दिशा निर्देश में विश्वविद्यालय द्वारा कार्यक्रम आयोजित किया जाना सराहनीय कार्य बताया यह कार्यक्रम मैनकाइण्ड फार्मा लि. नई दिल्ली के सहयोग से आयोजित किया गया। सभी पशुपालको को प्रमाण–पत्र के साथ–साथ पशुओं के उपयोग के लिए खनिज लवण एवं परजीवी रोगों से निजात के लिए कृमिकनाशक औषधी आदि का निःशुल्क वितरण किया गया।

संगोष्ठी कार्यक्रम में पशुपालको को जानकारी देते अधिष्ठाता निदेशक शोध डा. ए.एस. नैन एवं अन्य अधिकारीगण।

निदेशक संचार